मॉड्यूल '1' – कहानी: विशेष अध्ययन
(एम.एच.डी.: 9 से 12 तक)

एम.एच.डी.–09
कहानी:स्वरूप और विकास
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–09
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–09/टी.एम.ए./2022–2023
कुल अंक : 100

खंड 'क'

1. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 15 × 4 = 60

(क) आधुनिक विधा के रूप में 'कहानी' के उदय पर विचार कीजिए।

(ख) कहानी की भाषिक विधियों पर प्रकाश डालिए।

(ग) राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में प्रेमचंद की कहानी 'शांति' का विवेचन कीजिए।

(घ) लैटिन अमेरिकी देशों में कहानी के विकास पर एक निबंध लिखिए।

(ड.) समकालीन हिंदी कहानी में स्त्री और दलित जीवन की उपस्थिति को रेखांकित कीजिए।

खंड 'ख'

2. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए : **10 × 4 = 40**

(क) छोटी कहानी की अवधारणा

(ख) नयी कहानी आंदोलन

(ग) रूस में कहानी

(घ) प्रेमचंद और हिंदी कहानी

एम.एच.डी.–10
प्रेमचंद की कहानियाँ
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–10
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–10/टी.एम.ए./2022–2023
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिएः **10 x 2 = 20**

(क) जब वे सचेत हुई तो किसी की जरा सी आहट न मिलती थी। समझी कि सब लोग खा–पी कर सो गये और उनके साथ मेरी तकदीर भी सो गयी। रात कैसे कटेगी? राम! क्या खाऊँ? पेट में अग्नि धधक रही है? हाँ किसी ने मेरी सुधि न ली! क्या मेरा पेट काटने से धन जुड़ जाएगा? इन लोगों को इतनी भी दया नहीं आती कि न जाने बुढ़िया कब मर जाए? उसका जी क्यों दुखावें? मैं पेट की रोटियाँ ही खाती हूँ कि और कुछ? इस पर यह हाल। मैं अंधी? अपाहिज ठहरी, न कुछ सुनुँ न बूझूँ। यदि आँगन में चली गयी तो क्या बुद्धिराम से इतना कहते न बनता था कि काकी अभी लोग खा रहे हैं, फिर आना। मुझे घसीटा पटका। उन्हीं पूड़ियों के लिए रूपा ने सबके सामने गालियां दीं। उन्हीं पूड़ियों के लिए इतनी दुर्गति करने पर भी उनका पत्थर का कलेजा न पसीजा। सबको खिलाया, मेरी बात तक न पूछी। जब तब ही न दीं, अब क्या देंगे?

(ख) रूपमणि ने आवेश में कहा – अगर स्वराज्य आने पर भी सम्पत्ति का यही प्रभुत्व रहे और पढ़ा–लिखा समाज यों ही स्वार्थान्ध बना रहे, तो मैं कहूँगी, ऐसे स्वराज्य का न आना ही अच्छा। अंग्रेजी महाजनों की धन–लोलुपता और शिक्षितों का स्वहित ही आज हमें पीसे डाल रहा है। जिन बुराइयों को दूर करने के लिए आज हम प्राणों को हथेली पर लिए हुए हैं, उन्हीं बुराइयों को क्या प्रजा इसलिए सिर चढ़ाएगी कि वे विदेशी नहीं, स्वदेशी हैं? कम से कम मेरे लिए तो स्वराज्य का यह अर्थ नहीं है कि जॉन की जगह गोविन्द बैठ जाएँ। मैं समाज की ऐसी व्यवस्था देखना चाहती हूँ, जहाँ कम–से–कम विषमता को आश्रय न मिल सके।

(ग) दुखी अपने होश में न था। न–जाने कौन–सी गुप्तशक्ति उसके हाथों को चला रही थी। थकान, भूख, कमजोरी सब मानो भाग गई। उसे अपने बाहुबल पर स्वयं आश्चर्य हो रहा था। एक–एक चोट वज्र की तरह पड़ती थी। आध घण्टे तक वह इसी उन्माद की दशा में हाथ चलाता रहा, यहाँ तक कि लकड़ी बीच से फट गई – और दुखी के हाथ से कुल्हाड़ी छूट कर गिर पड़ी। इसके साथ ही वह भी चक्कर खाकर गिर पड़ा। भूखा, प्यासा, थका हुआ शरीर जवाब दे गया।

2. प्रेमचंद की कहानियों में निहित राष्ट्रीय चेतना पर विचार कीजिए। 16

3. प्रेमचंद की कहानियाँ जाति उन्मूलन का उद्घोष करती हैं इस कथन की समीक्षा कीजिए। 16

4. प्रेमचंद की कहानी कला की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 16

5. 'नमक का दरोगा' कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए। 16

6. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी के आधार पर प्रेमचंद की व्यंग्य दृष्टि पर विचार कीजिए। 16

एम. एच. डी.–11
हिन्दी कहानी
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–11
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–11/टी.एम.ए./2022–2023
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिएः **10x2=20**

(क) एक तो पीठ में गुद्‌गुदी लग रही है। दूसरे रह–रहकर चम्पा का फूल खिल जाता है उसकी गाड़ी में। बैलों को डाँटो तो 'इस–बिस' करने लगती है उसकी सवारी।.....उसकी सवारी! औरत अकेली, तम्बाकू बेचनेवाली बूढ़ी नहीं! आवाज सुनने के बाद वह बार–बार मुड़कर टप्पर में एक नज़र डाल देता है; अँगोछे से पीठ झाड़ता है।.....भगवान जाने क्या लिखा है इस बार उसकी किस्मत में! गाड़ी जब पूरब की ओर मुड़ी, एक टुकड़ा चाँदनी उसकी गाड़ी में समा गयी। सवारी की नाक पर एक जुगनू जगमगा उठा। हिरामन को सबकुछ रहस्यमय–अजगुत–अजगुत–लग रहा है। सामने चम्पानगर से सिंधिया गाँव तक फैला हुआ मैदान!... कहीं डाकिन–पिशाचिन तो नहीं?

(ख) मुहल्ला छोटे अफसरों और बड़े बाबुओं की बस्ती का। मुहल्ला भी क्या आमने–सामने खड़े बत्तीस क्वार्टरों का एक ब्लॉक। सुबह के नौ बजे होंगे, शायद साढ़े नौ। बदली थी, आकाश का मुंह उतरा हुआ। सड़क के किनारे–किनारे लगे युकिलिप्टस के पेड़ चुप थे, पत्तियां तक जीम हुईं। ऊपर से मौसम छलने वाला था लेकिन लोग जानते थे कि ज्यादा समय नहीं है। दफ्तर की भगदड़ शुरू होने का वक्त करीब–करीब ही था। वहां खड़े हर आदमी के पास कोई न कोई अपनी शिकायत थी जिसे जल्द से जल्द सुनाकर वह हल्का होना चाहता था। सभी का ख्याल था कि इधर आए दिन जो चोरियां होने लगी थीं, उन सबकी जड़ में यही छोकरा है।

(ग) बहुत दिनों के बाद बाजारों में तुर्रेदार पगड़ियाँ और लाल तुर्की टोपियाँ नजर आ रही थीं। लाहौर से आये मुसलमानों में काफी संख्या ऐसे लोगों की थी जिन्हें विभाजन के समय मजबूर होकर अमृतसर से जाना पड़ा था। साढ़े सात साल में आये अनिवार्य परिवर्तनों को देखकर कहीं उनकी आँखों में हैरानी भर जाती और कहीं अफसोस घिर आता–वल्लाह! कटरा जयमलसिंह इतना चौड़ा कैसे हो गया? क्या इस तरफ के सब–के–सब मकान जल गये थे। यहाँ हकीम आसिफअली की दुकान थी न? अब यहाँ एक मोची ने कब्जा कर रखा है?

2. 'डिप्टी कलक्टरी' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। **16**

3. एक कहानीकार के रूप में शाची का मूल्यांकन कीजिए। **16**

4. 'यही सच है' कहानी के आधार पर दीपा और निशीथ की चारित्रिक विशेषताएं स्पष्ट कीजिए। **16**

5. 'गौरैया कहानी' के कथ्य और शिल्प का विवेचन कीजिए। **16**

6. 'बोलने वाली औरत' कहानी के आधार पर ममता कालिया की स्त्री दृष्टि पर विचार कीजिए। **16**

एम. एच. डी.–12
भारतीय कहानी
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–12
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–12/टी.एम.ए./2022–2023
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिएः 10x2=20

(क) उसकी बातें सुनकर मेरे हृदय में यह उद्‌गार निकला, 'हाय भगवान! तुम्हारे नाम पर तुम्हें खुश करने का कितना अन्याय और पाप चल रहा है।' कुछ देर कुछ बोला नहीं। कुछ देर सोचने में लगा रहा। यह इन लोगों की कितनी बड़ी मूढ़ता है। संसार में ऐसी घृणित परिपाटी भी है। भगवान के नाम छोड़ देना तो सुना है। वह तो अपनी–अपनी भक्ति है। पर यह काम? इसी प्रकार लोग कैसे हीन कार्य कर रहे हैं? इनका क्या बनेगा? यह लड़की सचमुच गांव की एकदम अनजान भोली भाली युवती है। स्त्रियों का लक्षण ही कुछ और होता है। इसका कुछ और है। यह अपनी जनता के हीन रिवाज की शिकार भोली–भाली लड़की है। इसका दृढ़ विश्वास है कि जो यह कह रही है, उससे भगवान की मन्नत पूरी होगी। हाय भगवान! माता–पिता ही अपनी बेटी को पाप के गर्त में धकेलते हैं। उनका क्या होगा?।

(ख) 'बाघ घास नहीं, आदमी खाता है', लोगों की जबान पर रची–बसी हर युग की कहावत रही है, यह सभी को पता है, जैसे यह कि जहरीला सांप डंसता है, जंगली भैंसा सींग घुसेड़ता है। स्वभाव का मुंह बंद न कर दो तो स्वभाव बाहर आता ही है, जैसे स्वाधीन भाव से आदमी सोचता है –'संसार में अगर जन्म लिया है, तो जिंदा रहने तक दो मुट्‌ठी अन्न पाना हमारा जन्मगत अधिकार है, जिंदा रहने के लिए जितना कम से कम चाहिए, वह हमारा जन्मगत अधिकार है।' शायद उस बाघ ने भी ऐसा ही कुछ सोचा था, 'मेरी हर दिन की खुराक मेरा जन्मगत हक है'।

(ग) एक पागल तो हिंदुस्तान–पाकिस्तान के चक्कर में कुछ ऐसा गिरफ्तार हुआ कि और ज्यादा पागल हो गया। झाड़ू देते–देते वह एक दिन दरख़्त पर चढ़ गया और टहनी पर बैठकर दो घंटे निरंतर तक़रीर करता रहा, जो पाकिस्तान और हिंदुस्तान के नाजुक मसले पर थीं... सिपाहियों ने जब उसे नीचे उतरने को कहा तो वह और ऊपर चढ़ गया। जब उसे डराया–धमकाया तो उसने कहा – 'मैं न हिंदुस्तान में रहना चाहता हूँ न पाकिस्तान में.... मैं इस दरख़्त ही पर रहूँगा....। बड़ी देर के बाद जब उसका दौरा सर्द पड़ा तो वह नीचे उतरा और अपने हिंदू–सिख दोस्तों से गले मिल– मिलाकर रोने लगा। इस ख़्याल से उसका दिल भर आया था कि वह उसे छोड़कर हिदुंस्तान चले जाएंगे....।

2. 'प्राणधारा' कहानी के कथानक का विश्लेषण कीजिए। **16**

3. 'एक अविस्मरणीय यात्रा' कहानी के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए। **16**

4. दलित जीवन के संदर्भ में 'विद्रोह' कहानी का विश्लेषण कीजिए। **16**

5. 'ओडरे चुरुंगन मेरे' कहानी में मातृहीन बालक के अंतर्मन को गहराई से चित्रित किया गया है– इस कथन की समीक्षा कीजिए। **16**

6. हरिमोहन झा की कहानी कला की विशिष्टताओं को रेखांकित कीजिए। **16**